प्रकृति चित्रण

कवि परिचय :

मैथिलीशरण गुप्त

भारतीय संस्कृति की महिमा का अमर गान करने वाले राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव (झाँसी) उत्तरप्रदेश में सन् 1886 में हुआ। पिता सेठ रामचरण गुप्त से निष्ठा, भक्ति और कवित्व विरासत में मिला और माता से मिली अटूट श्रद्धा। आरम्भिक शिक्षा चिरगाँव की पाठशाला में हुई। तदुपरान्त झाँसी के मेकडानल विद्यालय में अध्ययन किया। स्वाध्याय द्वारा हिन्दी, संस्कृत, बंगला साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर गुप्त जी ने उच्च कोटि का साहित्य सृजन किया। सन् 1964 में इनकी मृत्यु हुई। साकेत, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, पंचवटी, जयद्रथ वध, भारत भारती इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

पंचवटी में सांस्कृतिक मूल्य के कारण वे रचना को संश्लिष्ट बनाते हैं, इस पर स्वच्छंदतावाद का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। गुप्त जी के काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीय संस्कृति का समन्वय और उसका उन्नयन है। भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम अतीत का जहाँ चित्रण किया है वहीं आधुनिक काल को वाणी देने वाले गुप्त जी भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति करते हैं। उर्मिला की पीड़ा, यशोधरा की व्यथा और कैकयी का पश्चाताप उन्होंने मौलिकता से सजीव रूप में अभिव्यक्त किया है। सभी प्रचलित काव्य शैलियों में उन्होंने काव्य रचना की है। सहज, सरल, आडम्बर विहीन भाषा में उन्होंने काव्य लिखा है। सभी रसों का सहज प्रयोग करने वाले गुप्त जी का आधुनिक काल की राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये द्विवेदी युग के प्रतिनिधि रचनाकार हैं।

प्रकृति का भरा-पूरा बड़ा परिवार है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे, आकाश, पृथ्वी, पर्वत, समुद्र, नदियाँ, जलाशय, खेत-खलिहान, पेड़-पौधे, जंगल सभी प्रकृति के परिवार में जन्म लेते हैं और अन्य प्राणियों की तरह जीवित रहते हैं और काल कवलित भी होते हैं। काफी समय तक पेड़-पौधों की गणना जड़ पदार्थों में थी किन्तु भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द बसु ने सिद्ध कर दिया कि उन्हे जीवन प्राप्त है वह जड़ नहीं है।

प्रकृति और मानवों में बड़ा घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य प्रकृति का उपासक बना रहा है। स्त्री-पुरुष प्रकृति की पूजा कर अपने को धन्य मानते आए हैं। कवियों ने प्रकृति के सौन्दर्य को अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

प्रस्तुत पाठ में कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने पंचवटी का बड़ा ही मनो मुग्धकारी वर्णन किया है। चाँदनी, मंद पवन, सुहावने वृक्ष, गोदावरी नदी के तट की सुन्दरता, धरती की हरियाली पर चमकते ओस कणों का बड़ा ही सुन्दर चित्रण है। प्रकृति हमारी तरह प्रसन्न भी होती है और करुणा से सजल द्रवित भी होती है। प्रस्तुत कविता में हमें पर्यावरण के प्रति सजग होने और प्रकृति के प्रति आत्मीय भाव प्रकट करने की प्रेरणा दी गई है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने प्रकृति के उपादानों का मानवीकरण करते हुए सौन्दर्य का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आधुनिक हिंदी कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य को स्थापित करने वाले कोमलकान्त पदावली के रचयिता सुमित्रानंदन पंत ने 'आः धरती कितना देती है' में प्रकृति के प्रदेय को स्पष्ट किया है। धरती माता मुक्त हस्त से अपने पुत्रों को देती है किन्तु स्वार्थवश हम अधिक की अभिलाषा रखते हैं जो उचित नहीं है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि का संदेश है कि हम 'जैसा बोयेंगे वैसा ही काटेंगे।'

पंचवटी

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल थल में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर तल में।

पुलक-प्रकट करती है धरती
हरित तृणों की नोकों से
मानों झूम रहे हैं तरु भी
मंद पवन के झोकों से।

क्या ही स्वच्छ चांदनी है यह
है क्या ही निस्तब्ध निशा
है स्वच्छन्द-सुमंद गंध वह
निरानंद है कौन दिशा ?

बंद नहीं, अब भी चलते हैं
नियति-नटी के कार्य कलाप
पर कितने एकांत भाव से
कितने शांत और चुपचाप।

है बिखेर देती वसुंधरा
मोती सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको
सदा सवेरा होन पर,

और विरामदायिनी अपनी
संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका
नया रूप झलकाता है।

सरल तरल जिन तुहिन-कणों से
हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे
साथ उन्हीं से रोती है।

अनजानी भूलों पर भी वह
अदय दण्ड तो देती है
पर बूढ़ों को भी बच्चों सा
सदय भाव से सेती है।

गोदावरी नदी का तट यह
ताल दे रहा है अब भी,
चंचल जल कल-कल मानो
तान दे रहा है अब भी।

नाच रहे हैं अब भी पत्ते
मन से सुमन महकते हैं
चंद्र और नक्षत्र ललककर
लालच भरे लहकते हैं।

आँखों के आगे हरियाली
रहती है हर घड़ी यहाँ
जहाँ-तहाँ झाड़ी से झिरती
है झरनों की झड़ी यहाँ।

वन की एक-एक हिमकणिका
जैसी सरस और शुचि है
क्या सौ-सौ नागरिक जनों की
वैसी विमल रम्य रुचि है।

कवि परिचय :

सुमित्रानंदन पंत

प्रकृति के चितेरे कवियर पंत जी का जन्म सन् 1900 में कोसानी नाम के एक रमणीय पर्वतीय ग्राम में हुआ। वे हिन्दी साहित्य उपवन के ऐसे पुष्प हैं जिन्होंने अपनी मादक सुगंध से रसिक जनों के चित्त को प्रफुल्लित किया है। भाव और कला दोनों की दृष्टि से पंतजी का काव्य वैभवपूर्ण है। कला के क्षेत्र में पंतजी ने सर्वथा ही नवीन काव्य का वैभवपूर्ण रंगीन महल खड़ा किया है तथा भावना क्षेत्र में प्रकृति और मानव जीवन के अतुल भाव सौंदर्य से हिंदी काव्य जगत को संपन्न किया है। उनकी अनुभूति एवं कल्पना इतनी सचेतन एवं प्रखर है कि प्रत्येक वर्णन चित्र बनकर सामने प्रस्तुत हो जाता है। उनका काव्य अनुभूति, चित्र और संगीत इन तीनों के सुंदर समन्वय के कारण प्रयाग की त्रिवेणी के समान एक नयी मधुरिमा एवं महिमा से आपूरित हो उठा है। इनकी मृत्यु सन् 1977 में हुई।

वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगवाणी आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं।

पंतजी की काव्य कला में उनकी अपरिमेय कल्पना शक्ति की सृष्टि है। प्रेम और सौन्दर्य का जैसा विकासशील गान उनकी कविता में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। पंतजी की कविता व्यक्तित्व की सीमा रेखा की बन्दिनी नहीं है।

पंतजी अपनी लेखनी से ही नहीं अपने संपूर्ण व्यक्तित्व से भी कवि रहे हैं। इतिवृतात्मकता और द्विवेदी युगीन काव्य भाषा के स्थान पर नूतन-काव्य भाषा के आविष्कार में पंतजी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

आः धरती कितना देती है!

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और फूल-फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।

पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
वंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गये!
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल-कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर।
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।

अर्धशती हहराती निकल गई है तब से।
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूली, शरदें मुसकाईं,
सी-सी कर हेमंत कँपे, तरु झरे, खिले वन।
ओ' जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर,

मैंने कौतूहलवश, आँगन के कोने की
गीली तह को ही उँगली से सहलाकर,
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे।
भू के अंचल में मणि माणिक बाँध दिए हों।

मैं फिर भूल गया इस छोटी-सी घटना को
और बात भी क्या थी, याद जिसे रखता मन।

फिर एक दिन, जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था–तब सहसा मैंने जो देखा,
उससे हर्ष–विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से।
देखा, आँगन के कोने में कई नवागत
छोटे–छोटे छाता ताने खड़े हुए है!
छाता कहूँ कि विजय–पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं, प्यारी–
जो भी हो, वे हरे–हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों–से।

निर्निमेष, क्षण भर, मैं उनको रहा देखता–
सहसा मुझे स्मरण हो आया–कुछ दिन पहले
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।
तब से उनको रहा देखता–धीरे–धीरे,
अनगिनती पत्तों से लद, भर गई झाड़ियाँ,
हरे–भरे टँग गए कई मखमली चंदोबे।
बेलें फैल गई बल खा, आँगन में लहरा–
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे–हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर का।
मैं अवाक् रह गया वंश कैसे बढ़ता है।
छोटे तारों–से छितरे, फूलों की छीटें
झागों–से लिपटे लहरी श्यामला लतरों पर
सुन्दर लगते थे मानव के हँसमुख नभ–से
चोटी के मोती–से, आँचल के बूटों–से।

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ।
पतली चौड़ी फलियाँ–उफ् उनकी क्या गिनती।
लम्बी–लम्बी अंगुलियों–सी, नन्हीं–नन्हीं
तलवारों–सी, पन्ने के प्यारे हारों–सी
झूठ न समझे, चन्द्र कलाओं–सी, नित बढ़ती
सच्चे मोती की लड़ियों–सी ढेर–ढेर खिल,

झुंड–झुंड झिलमिलकर कचचिया तारों–सी।
आः इतनी फलियाँ टूटीं, जाड़ों भर खाईं,
सुबह–शाम वे घर–घर पकीं पड़ोस पास के
जाने अनजाने सब लोगों में बँटवाईं,
बंधु, बाँधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतों ने
जी भर–भर दिन–रात मुहल्ले भर ने खाईं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ।

यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को।
नहीं समझ पाया था, मैं उसके महत्व को।
बचपन में, छिः स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर!

रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची ममता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की–जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ।
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

अभ्यास

बोध प्रश्न

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चन्द्रमा की किरणें कहाँ-कहाँ फैली हुई हैं?
2. धरती अपनी प्रसन्नता किस प्रकार प्रकट कर रही है?
3. पैसा बोने के पीछे कवि का स्वार्थ क्या था?
4. कवि ने धरती में क्या बोया ?
5. कवि एक दिन अचरज में क्यों भर उठे?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि ने ओस की बूँदों को लेकर क्या कल्पना की है? पंचवटी कविता के आधार पर बताइए।
2. प्रकृति को नटी क्यों कहा गया है?
3. गोदावरी नदी के तट का मोहक वर्णन कीजिए।
4. कवि ने किरणों के सौंदर्य वर्णन में कौन-सी युक्ति अपनाई है?
5. ''सुन्दर लगते थे मानव के हँसमुख मन से'' इस पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?
6. कवि की धरती माता के प्रति क्या धारणा बनी?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **पंचवटी में प्रकृति के उपादानों की शोभा का वर्णन कीजिए।**
2. **निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या लिखिए-**

   अ. **है बिखेर देती वसुन्धरा**
   मोती सबके सोने पर,
   रवि बटोर लेता है उनको
   सदा सबेरा होने पर।

   आ. **''पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा**
   बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला''

3. मानवता की सुनहली फसल उगाने से कवि का क्या आशय है?
4. **''हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे''** कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

आइए सीखें-

हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।

इस उदहारण में -

बच्ची - की तुलना फूल - से की है

सी - से समानता बतलायी है यह वाचक शब्द है।

कोमल - विशेषता, सामान्य गुण स्पष्ट किया है।

अत: यहाँ बच्ची - उपमेय, फूल-उपमान, सी-वाचक कोमल - साधारण धर्म है।

उपमेय - जिसका वर्णन हो रहा है। अर्थात् जिसकी उपमा (तुलना) दी जाए।

उपमान - उपमेय की जिससे तुलना की जाए।

साधारण धर्म - उपमेय और उपमान का परस्पर गुण विशेषता

वाचक शब्द - जिन शब्दों से समानता प्रगट हो अर्थात समानता वाचक शब्द-

सी, सम, ज्यों, सा, सरीखा, तुल्य, नाई आदि।

उपमा अलंकार - उप+मा = उपमा। यहाँ उप का आशय है समीप और मा का आशय है मापना

अर्थात् समीप रखकर मिलान करना समानता बतलाना।

जब किसी वस्तु का वर्णन करते हुए उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना करते हैं, तब उपमा अलंकार होता है।

जैसे - **"हाय। फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।"**

यहाँ बच्ची उपमेय, फूल, उपमान सी-समानता बताने वाला शब्द तथा कोमल विशेषता है (साधारण धर्म)

रूपक अलंकार -

उपमेय पर उपमान का आरोप या उपमान और उपमेय का अभेद ही रूपक अलंकार है।

उदाहरण -

"उदित उदयगिरि-मंच पर, रघुबर बाल-पतंग।
विकसे संत-सरोज सब, हरषे लोचन-भृंग ॥"

यहाँ - 1. उदयगिरि पर मंच का 2. रघुबर पर बाल-पतंग का,

3. संतों पर सरोज का और 4. लोचनों पर भृंग (भौरों) का अभेद आरोप है। अत: रूपक अलंकार है।

उत्प्रेक्षा अलंकार-

उत्प्रेक्षा का अर्थ है- किसी वस्तु को सम्मानित रूप में देखना।

उपमेय में कल्पित उपमान की सम्भावना को उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं।

इसके वाचक शब्द- जनु, जानी, मनो, मानो, मनहु, ज्यों आदि आते हैं।

उदाहरण-

"सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनहुँ नील मणि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात॥"

इन काव्य पंक्तियों में-

श्रीकृष्ण के सुन्दर शरीर में नीलमणि पर्वत की और इनके शरीर पर शोभायमान पीतांबर में प्रभात की धूप की मनोरम सम्भावना अथवा कल्पना की है। अत: उत्प्रेक्षा अलंकार है। उदाहरण :-

पुलक प्रकट करती है धरती
हरित तृणों की नोकों से।
मानों झूम रहे हैं तरु भी
मन्द पवन के झोकों से।

1. निम्नलिखित काव्य पँक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचानकर लिखिए-

अ. मानो झूम रहे हैं तरु भी
मन्द पवन के झोंकों से

आ. चारु-चन्द्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल-थल में।

इ. निर्झर के निर्मल जल में,
ये गजरे हिला-हिला धोना।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

सवेरा, शुचि, बूढ़ा, हर्ष

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

आँख, रवि, धरती, रजनी, फूल।

4. निम्नलिखित पँक्तियों का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

क. रवि बटोर लेता है, उनको
सदा सबेरा होने पर।

ख. अति आत्मीया प्रकृति,
हमारे साथ उन्हीं से रोती है।

- **जहाँ प्रकृति को मानव के रूप में व्यवहार करते हुए दिखाया जाए वहाँ प्रकृति का मानवीकरण होता है।**

5. पाठ में संकलित अंशों से प्रकृति के मानवीकरण के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. प्रकृति के सौन्दर्य से सम्बन्धित कविताएँ संकलित कीजिए और पढ़िए।
2. पर्यावरण संरक्षण के लिए एक योजना तैयार कीजिए और अपने विद्यालय के चारों ओर कुछ सुन्दर पौधे भी

लगाइए।

3. **''जो ताको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल।**
तोय फूल को फूल है बाको है त्रिशूल॥''

इस दोहे का भाव समझ कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

4. 'प्रकृति और मानव' इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

शब्दार्थ

अवनि – पृथ्वी, निस्तब्ध–शांत, पुलक –प्रसन्नता, निरानन्द – आनन्द से रहित, तृण – तिनका, नियति – भाग्य, प्रकृति, शून्य–आकाश, चारु –सुन्दर, नटी–नर्तकी, हरित–हरे, तरल–द्रव, वसुंधरा– पृथ्वी, तुहिन–ओस, विरामदायिनी – विश्राम देने वाली

कलदार – रुपए का सिक्का, बंजर – अनुपजाऊ, हताश – निराश, अपलक – बिना पलक झपकाए, पाँवड़े –पाँव रखकर चलने के लिए बिछाया जाने वाला कपड़ा अर्धशती–पचास वर्ष हहराती – गूँजती हुई (शोर मचाती हुई), नवागत – नए आए हुए, डिम्ब – अंडा, निर्निमेष – बिना पलक झपकाए, लतर– लता (बेल), रत्न प्रसबिनी – रत्नों को जन्म देने वाली

* * *